ग्रहण लगा

तथा

अन्य राष्ट्रीय कविताएँ

कमलेश सक्सेना

साहित्य भवन प्रा० लि०
इलाहाबाद

ग्रहण लगा

तथा

अन्य राष्ट्रीय कविताएँ

कमलेश सक्सेना

साहित्य भवन प्रा० लि०
इलाहाबाद

प्रकाशक
साहित्य भवन प्रा० लिमिटेड
इलाहाबाद

मूल्य : तीन रुपया
१९६३

मुद्रक
प्रगति प्रेस
७३, कल्याणी देवी
इलाहाबाद

देश के जवानों को
जो
हिमालय और गंगा,
अजन्ता और एलोरा
और
गौतम और गाँधी के
सच्चे पहरेदार हैं

चीनी जैसा पड़ोसी साबित हुआ वैसा पड़ोसी ईश्वर न करे किसी को कोई मिले।

चीनियों ने ग़द्दारी की। मन बहुत खीझा और भावों ने गीतों के नपे-तुले साँचों में अपने को कसने से इनकार कर दिया तो, मुक्त छंद चुना।

भाव बँध गये। फिर, सम्मतियाँ-सुझाओं के लिये गुरुजनों और मित्रों का सहारा लिया।

उन सब का अनुग्रह मुझ पर है। रचना सेवा में प्रस्तुत है।

कमलेश सक्सेना

क्रम

माँ, छेड़ो वीणा

माँ, छेड़ो अपनी वीणा फिर एक बार
गूँज उठे जल-थल-अम्बर अपार
लेकिन, यह राग हो अपने आप में तूफ़ान,
ताज्जुब से देखे दुनिया-जहान,
शत्रु की हिम्मत हो पस्त,
वह लगे जैसे कोई तारा अस्त ।
और, जीवन हो निखरा,
साँचे में ढला
सोना जैसे अभी-अभी हो
आँच से तपकर निकला
यह चीन, यह चाऊ-एन-लाई,
जिनको हमने कभी समझा था भाई
जिन पर विश्वास कर
हमने गँवा दी
जिन्दगी की सारी कमाई,
आ जायें होश में,
समझें क्या सूखा, क्या नमी,
दोस्ती को समझें दोस्ती,
आदमी को जाने आदमी ।
आखिर
ऐसा भी क्या कि

प्रकाशक
साहित्य भवन प्रा० लिमिटेड
इलाहाबाद

मुद्रक
प्रगति प्रेस
७३, कल्याणी देवी
इलाहाबाद

मूल्य : तीन रुपया
१९६३

देश के जवानों को
जो
हिमालय और गंगा,
अजन्ता और एलोरा
और
गौतम और गाँधी के
सच्चे पहरेदार हैं

चीनी जैसा पड़ोसी साबित हुआ वैसा पड़ोसी ईश्वर न करे किसी को कोई मिले।

चीनियों ने ग़द्दारी की। मन बहुत खीझा और भावों ने गीतों के नपे-तुले साँचों में अपने को कसने से इनकार कर दिया तो, मुक्त छंद चुना।

भाव बँध गये। फिर, सम्मतियाँ-सुझाओं के लिये गुरुजनों और मित्रों का सहारा लिया।

उन सब का अनुग्रह मुझ पर है। रचना सेवा में प्रस्तुत है।

कमलेश सक्सेना

क्रम

माँ, छेड़ो वीणा

माँ, छेड़ो अपनी वीणा फिर एक बार
गूँज उठे जल-थल-अम्बर अपार
लेकिन, यह राग हो अपने आप में तूफ़ान,
ताज्जुब से देखे दुनिया-जहान,
शत्रु की हिम्मत हो पस्त,
वह लगे जैसे कोई तारा अस्त।
और, जीवन हो निखरा,
साँचे में ढला
सोना जैसे अभी-अभी हो
आँच से तपकर निकला
यह चीन, यह चाऊ-एन-लाई,
जिनको हमने कभी समझा था भाई
जिन पर विश्वास कर
हमने गँवा दी
जिन्दगी की सारी कमाई,
आ जायें होश में,
समझें क्या सूखा, क्या नमी,
दोस्ती को समझें दोस्ती,
आदमी को जाने आदमी।
आखिर
ऐसा भी क्या कि

कुछ न करना हो तो
कसो शत्रुता के टट्टू पर जीन
मैं कहती हूँ
कि अब भी नहीं बिगड़ा कुछ,
नशे की आदत छोड़,
अफ़ीम की पीनक से उभर, चीन !
बात समझ में आ जाये तो
ठीक,
वरना
निगल जायेगी तुझको मौत की बीमारी,
क्योंकि पुरुष तो पुरुष,
भारत की नारी
वीणा लेती है हाथ में तो कहलाती है वाणी
वरना उसके और भी नाम हैं।
उसको और तरह की भी चढ़ती है डाली
कहीं वह होती है दुर्गा, कहीं चंडी,
कहीं काली !
माँ
समझा दो पड़ोसी
दुश्मनों को,
हम इतना सब, इतना कुछ कहते हैं,
हमें कोई बहुत बड़ा सुख नहीं है,
बहुत बड़ा क्लेश है,
लेकिन, वह भी तो यह समझे
कि भारत
ड्रैगनों का नहीं

देवी-देवताओं का देश है !
माँ,
समझा दो उसे ।

माँ

मां
मुझे टोको मत
और, मुझे रोको मत
आज जयचंदों का मेला है
अपने इस देश में,
और सुनते हैं कि चीन ने हमला किया है,
संकट की बेला है।
इन अक्ल के मारों से,
इन जहन्नुमरसीद ग़द्दारों से
मुझे पूछना है
कि आज जब संकट है,
हिलता-सा नजर आता
अपना अक्षयवट है,
तब तुम क्या चट्टान बन कर
जड़ हो जाओगे,
और समझाओगे
कि दुश्मन भी चट्टान है
इनसे डरना क्या है,
इनका स्वागत करो,
घर आये मेहमान हैं !
लेकिन, सवाल दूसरा है

कि आँधी, तूफ़ान-झंझा
जब एक होंगे,
सब कुछ मिटा देने की टेक होंगे,
तो क्या तुम स्थिर खड़े रहोगे
सूरज-चाँद हो
कि आसमान में जड़े रहोगे ?
इसीलिए कहती हूँ
कि यह गद्दारी छोड़ो,
भारत के अभिमान बनो,
तीर का सीधा वार बनो
दुश्मन की ढाल न हो,
उसका सिर खम करने वाली
तेज तलवार बनो
तुम हैवान हो रहे हो
जरा इन्सान बनो
भारत का रक्त तुममें है,
भारत के अभिमान बनो !

माँ की लाज को बचाना ही था

माँ की लाज को बचाना ही था
तुमको जाना ही था
वैसे यह भी सही है
कि तुम्हारा अभाव मुझे बहुत खला
अन्तर में जैसे विरहानल जला
कभी हँसी, कभी मैंने गाना गाया
कभी तुम्हें दूर, तो कभी अपनी
साँसों के पास पाया
स्वजन आये
उन्होंने मुझे जी भर समझाया
परन्तु, अंत में हाथ
उनके कुछ न आया
फिर-जाने कैसी-कैसी सी बातें
मेरे मन में आईं
होनी और अनहोनी
शुभ और अशुभ को लेकर
मेरे मन की कलियाँ रह-रह मुरझाईं
मैं बहुत अधीर हुई, रोई
तो तुम सपनों में मेरे पास आये,
तुमने मुझे धीरज बँधाया,
मेरे कर्त्तव्य

मुझे एक-एक कर गिनाये
फिर दरवाजा खुला,
कोई आया
मैंने कहा शायद सचमुच का संदेशा लाया
दरवाजा खोला,
तो हवा का झोंका बोला
यह तो मैं था
घबड़ाओ नहीं, मैं क्या कोई प्रेत-भूत हूँ
मैं केवल पवन-दूत हूँ
आया हूँ तुम्हें बतलाने
कि तुम्हारे 'वे' सकुशल हैं
उन्होंने मुझे बहुत बहुत सहेजा है
लड़ाई के किस कोने से भेजा है,
यह तो कह नहीं सकता,
क्योंकि नहीं जानता
आदेश देने वाले को नहीं पहिचानता
हाँ, यह जानता हूँ
कि लड़ाई की बात
छिपाकर ही रखी जाती है,
जैसे अपने प्रियतम की
बातें किसी दूसरे के सामने कहने की बात
तुम्हें नहीं भाती है।
यह न दर्द की बात है,
न सवाल है क्लेश का,
बात यह है कि तुम्हारे यहाँ सवाल है व्यक्ति का,
तो वहाँ प्रश्न है देश का !
फिर पवन ने मुझे

भाई की तरह हल्के से छुआ
कहने लगा
चिन्ता मत करो कि वहाँ क्या हुआ ?
कहा है उन्होंने कि
जीतेंगे हम
और अब जीत कर ही
हम दो से हो सकेंगे एक,
जब तुम गौरव के चन्दन से
करोगी उनका अभिषेक !
तब तक तुम धारो धैर्य,
बात मानो बीरन की !
आयेगा, आयेगा, अवश्य आयेगा
तुम प्रतीक्षा करो उस मंगलमय छन की ।

●

मेरे प्यारे वीर जवान

मेरे प्यारे
वीर जवान,
बहादुर सिपाही, बढ़ो,
नेफ़ा और लद्दाख में
पहाड़ों की कलाइयाँ मरोड़ो,
चोटियों पर चढ़ो
मदद करो इनकी
ऊँचे पहाड़ों
जवानों, आगे, बढ़ो
दुश्मनों को पछाड़ो।
पहाड़ों पर चढ़ो
आगे ही आगे बढ़ो
यह काले-कोस तुम्हें कभी भी न लगें कड़े
देखना, कदम पीछे भूल से भी न पड़े
भला किसी से कैसे
देखा जाय,
अगर माँ की ओर कोई
उँगली उठाये
पत्नी का सुहाग-रतन,
गंगा जल का मन,
सोने का तन

राह देखेगा तुम्हारी
तुम लिखो पाती
दुश्मन ने बाज़ी हारी ।
फिर लौटो
वतन, शहर, गाँव
पूजा तुम्हारी होगी ठाँव-ठाँव;
पर, पहिले पूजा का अधिकार जीतो,
अपनी बहनों का, भाइयों का,
पत्नी का प्यार जीतो ।
मेरे प्यारे,
वीर जवान,
बहादुर सिपाही बढ़ो
नेफ़ा और लद्दाख़ में
दुश्मनों की कलाइयाँ मरोड़ो
दुश्मनों के सीने पर सवार हो,
चढ़ो
मेरे प्यारे
वीर-जवान !!

एक से एक नायक

एक-से-एक नायक,
महानायक की धरती यह,
झाँसी की लक्ष्मीबाई और
तांत्याटोपे जैसों का दम भरती यह
'दो गज़ ज़मीन भो न मिली कूचे यार में'
को सोच-सोच बिसूरती कुछ,
और है सिहरती यह कि
कैसी वीर-प्रसू
और कैसी शौर्ययोग्या हूँ—
कैसी वसुन्धरा हूँ,
कैसी वीरभोग्या हूँ।
और, इतिहास का क्रम है कि
चलता चला जाता है
गौरीश्रृङ्ग-चोटी से
जिसका बड़ा नाता है—
और, आज उसी क्रम,
उसी चोटी,
उसी नाते पर डाका जब पड़ा है
पूरे का पूरा आकाश जैसे
अचरज में पड़ा है।
लेकिन, शौर्य-शौर्य है

मोह का पाश नहीं है
धरती धरती है,
जड़, निकम्मा, सा आकाश नहीं है
धरती कहती है
मेरे दूध की लाज करो
मेरी गोद में देखे सपनों को सच में बदलो
आँचल के साये में फूले हो
रण के प्रांगण में फलो
कोई अगर भूल से भी उधर देखे,
तो उसे ठेलो
कोई तुम्हारे घर में धँसता चला आये,
तो उसे दोनों हाथ-पकड़ कर पीछे ढकेलो
जो तुम्हारी स्वतंत्रता पर
दृष्टि रक्खे
उसका सब कुछ हरण करो
मन के पूरे बल से
दुश्मन को मात दो,
स्वतन्त्रता का वरण करो
हाँ, स्वतन्त्रता का वरण करो।

●

मेरे वीर महावीर

मेरे बन्धु
आओ-आगे आओ
स्वीकारो महावीर चक्र,
इसे सीने पर सजाओ
तुमने चुशूल की रक्षा की,
उसे दुश्मनों से बचाया
अपने मन के उत्साह से,
अन्तर की उमंग से,
वीरता के रूप से
उसके माथे पर
तिलक लगाया
ब्रिगेडियर तपीश्वर नारायन रैना
देश की रक्षा का भार
तुम जैसे वीरों से कंधों पर
आज भी है
तुम जैसे शूरों के कारण ही
आज तक बची
भारत की लाज भी है
तुम कसौटी पर कसे गये,
खरे उतरे
जैसे जेठ-बैसाख की

झुलसन के बाद
बगिया का आँगन
चाँदी और पारे को
बूँदों से भरे !
तुम कसौटी पर कसे गये
खरे उतरे
हाँ, खरे उतरे !

हिन्द के जवानों

हिन्द के जवानों
ऐसा क्षण नहीं है कि
आलस्य तुम मानो।
अपने इस देश को ही
क्या तुम कुछ जानते हो ?
अपने इस हिमालय को
क्या तुम पहचानते हो ?
यदि हाँ, तो चाँदी की चोटियों
पर बल दो
दुश्मन को दलने को
तुम तत्क्षण बल दो
प्रश्न सम्मान का है
यह सम्मान जो मेरा है, तुम्हारा है
उस पर, पुरुषार्थ को
चीन ने ललकारा है।
ऐसे में तन-मन-धन,
सब कुछ वार दो
शौर्य और साहस
की तेगों पर धार दो
दुश्मन से कहो
देखो, भाई, धोखे में मत रहो।
हमने उत्थान-पतन दोनों ही देखा है,

भारत के माथे पर
अनुभव की रेखा है !
इसलिये ताश के इन पत्तों को
ज़रा सध कर फेंटो
जाओ यहाँ से,
अपना जाल यह समेटो
जाओ यहाँ से

●

मेरे भाई

मेरे भाई—मेरे भाई,
यह कल का नहीं,
आज का सवाल है
यह किसी और का नहीं,
माँ की लाज का सवाल है !
दुश्मन—हँसो उस पर,
कौन उसको कहेगा दाना ?
लेकिन, तुम देखो
माँ का दूध मत लजाना
पर्वतों को भाई मानो,
नदियों को बहिन कहो,
पर्वतों से ऊँचाई लो,
नदियों से प्रवाह और गति लो,
वीरता के ज्वार में बहो !
विवेक जब सड़ जाता है
तो कहलाता है जड़
ऊँचा मुँह कर चीखने से ही
शेर नहीं हो सकता है गीदड़
मौत का हमें क्या डर !
हम गीता के सर्जक,
शरीर को हम मानते हैं मात्र-शरीर,

आत्मा को मानते हैं अजर-अमर !
लेकिन, अर्जुन से
जो कहा कृष्ण ने उसे ध्यान में रक्खो
ज़रूरत हो हाथ दिखलाने की
तो तलवार मत म्यान में रखो
हम नहीं अफ़ीम खाने वाले अफ़ीमची,
हम तो
अपने मन के बज्र की दृष्टि से भी
हैं हट्टे-कट्टे
दुश्मन भी समझे उसका पाला किसी से पड़ा,
उसके दाँत करदो खट्टे।
मेरे भाई,
तुम और कायरता ?
इसकी कल्पना का
तार भी मुझे नहीं भाता है,
तुम्हारा और टूटी हुई हिम्मत का
तीन और छः का नाता है !
तो, बस,
मरोड़ दो कलाइयाँ
दुश्मनो के दाँत कर दो खट्टे,
मेरी राखी का हक़ करो अदा,
करो यश की कमाई,
शूर, वीर, धीर, गम्भीर,
ओ, मेरे भाई !

●

भैया मेरे बीरन

बहिन मेरी,
इस समय कहाँ से आ रही हो
और कहाँ जा रही हो ?
जा रही हो घायलों को देखने,
उन्होंने पराक्रम दिखाया जो
उसको मूर्त्त-रूप में लेखने,
और सुनने, उनकी
और उनके साथियों की वीर-गाथायें
कि सिर अभिमान से तने
और आँखों में आँसू भी आयें
कि पलकें उन्हें अन्दर ही अन्दर
घोंट जाना चाहें ?

उनकी बातों में
गौरव भी होगा, दर्द भी
उनके चेहरे शौर्य से गुलाबी भी होंगे
और कष्टों को सहने से, ज़र्द भी
पर, तुम उठना इससे ऊपर,
कहना
मेरे भाई, मेरे सहोदर
तुम सच्चे सिपाही हो,
कसौटी पर कसे हुए जवान हो,

आज से नहीं,
इतिहास के आरम्भ के दिनों से
वीरता के सजीव
आख्यान हो !
प्राणों को तुच्छ समझने की
अनूठी आन-बान हो !
कहना
भैया, मेरे बीरन,
मेरे धीरज-धन
दुश्मन ने इस बार नहीं किया,
तो,
आगे भी वह तुम्हारे
पराक्रम पर सन्देह नहीं करे
कहना—हम
अपनी शान के
लिए सदा ही जिये,
अपनी शान के लिए सदा ही मरे !
हमारी तलवार की धार
कभी ज़ंग नहीं चखती,
जीवन की घिसी-पिटी परिभाषा
हमारे जीवन के सामने
कुछ महत्व नहीं रखती !
भैया, मेरे बीरन

भाई

सितारों,
बिछो पथ में
सूरज की किरणों के
स्वागत-स्वर्ण-रथ में
तुम्हें पता है,
लड़ाई के मोर्चे से
सच्चे और परखे हुए,
कसे हुए कसौटी पर,
शौर्य और वीरता के
पावन उन्मेश आ रहे हैं
मेरे वे भाई सब
लौट कर जल्दी ही
स्वदेश आ रहे हैं
सजाओ चंदा का मंगलघट,
चाँदनी की बन्दनहार,
सूरज का टीका,
ऊषा और सन्ध्या
के हर्ष भरे आँसुओं
के मोती-हार !
अब देर मत लगाओ,
जल्दी करो,

सब कुछ सजाओ
किन्नर-गंधर्व,
स्वर्ण निज त्यागो,
और धरती पर आओ
यह पुनीत बेला है
जन गण मन गाओ !
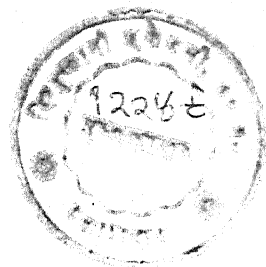
बादल बरसा

बादल बरसा
सावन आया
कोयलों ने तुम्हें टेरा,
मोरों ने तुम्हें बुलाया
पर, मैंने कहा
बादलों, नहीं
मन के तारों को दर्द नहीं परसें
तुम यहाँ बरसते हो,
मेरे भाई वे, शौर्य की बूँदें
वहाँ बरसें
हाँ, चीनियों
के हठ की मूढ़ मति झुक गई है,
और लड़ाई रुक गई है,
परन्तु, पानी की प्यास कौन करे
और, ऐसे अविश्वासियों का
विश्वास कौन करे ?
शायद वे अब भी
व्यस्त उत्पात में हों,
और, किसी मौके की घात में हों
तो, फिर
तो फिर क्या होगा ?

तो, फिर
मेरे भाई
वैसे बरसेंगे
जैसे, बादल, तुम भी नहीं बरसते
यक़ीन करो, तुम उन्हें देख कर
रह जाओगे सहज ही तरसते
बात यह है
कि फूल जिस डाल पर खिलता है
उसी पर मुरझाता है,
उसी तरह वीर अपने देश के
लिये जीता है,
अपने देश के लिये मर जाता है।

बस, तो
मेरे भावों को समझो,
मेरे मन की सीमायें परसो
भाई, मेरे समय आने पर बरसेंगे
तुम अभी जीवन का ताप हरो,
बरसो,
जी भर कर बरसो !!

●

दीवाली आ गई

हाँ, दीवाली आ गई है
दीपों की लौ
अपने मन के भावों का
एक गीत-सा गा गई है
कहती है
सच है कि लड़ाई जब छिड़ी थी,
हमारी सेना जब धोखेबाज चीनियों से भिड़ी थी
तो हमने दीवाली पर
दीपक नहीं जलाये थे,
हमें बड़ी चिन्ता थी,
हमारे मन भर-भर आये थे
परन्तु, आज,
हमें नहीं लाज,
बल्कि हमें सचमुच अभिमान है,
क्योंकि यह तो मेरे ही देश का जवान है
जिसने दुश्मन के लोहे से लोहा बजाया,
उसे हिमालय से खदेड़ा,
नेफ़ा से भगाया
और जो, यश कमा कर वापिस घर आया।

तो, मात्र स्नेह से ही नहीं
इस यश से भी आज प्रकाश गढ़ो

उल्लास के भोजपत्रों पर
इनकी गाथायें लिखो
उन्हें सूरज, चाँद, सितारों की रोशनी से मढ़ो ।
पराक्रम की चाँदनी है
रात यह अमावस की जरा नहीं काली है
आओ, मनायें
यह दुर्लभ दीवाली है !

●

जाड़े की ऋतु आई है

लोकगीत अवधी का
याद है
मैंने सुना था कभी,
और, फिर बरसातों में
उसको गुना था कभी
राम वन में थे,
चरणों में व्रण थे,
साथ में सीता थी,
अनुजवर लक्ष्मण थे
कि सावन आया
बादलों को लाया
पानी खूब बरसा!
लेकिन माता कौशिल्या का
सहसा ही अन्तर आया भर-सा
बोलीं
राम का भीजता होगा पटुका,
लक्ष्मण का भीगता होगा धनुषबान
सीता का भीगता होगा
सिंदूर माँग का
हाय रे, विधि-विधान !
ऐसे में बादल

ां का पानी कुछ यहाँ बरसा दे।

ओं और यातनाओं का

रा जग, बस, यहीं बसा दे !

समय तो एक ही थीं,

आज अनगिन कौशिल्यायें

ाती हैं वरदान

ातें मानती हैं

मेरे भगवान !

ड़ा जो आए तो

ाल यहीं सर्दी पड़े

जे का काँटा जो कहीं उगे

हमें ही गड़े

ों कि

ाड़ों की चोटियों

बीच हैं

ारे सुत,

चल की लाज

का रोंआ न दुखे,

कि बदले

रा दुःख कोई उनका हमें दे दे

ाज !

सी को खले तो खले,

किन हमें तो सचमुच

ात भाई है

कोई यह कह दे
कि केवल हमें पूछती हुई
जाड़े की ऋतु आई है !!

●

फाग आया है

फाग आया है
नेफ़ा और लद्दाख के मोर्चे से
अपने पंखों में रंग भर कर
नया जीवन लाया है !
नया-सा संदेश है
लिखा है
मेरी माँ,
मेरी बहन,
मेरी रानी,
तुम्हें बहुत क्लेश है
क्योंकि मैंने वीरता की राग से
लौ लगाई है
दुश्मन के दाँत खट्टे करते-करते
वीर गति पाई है ?
फाग आया है
जैसे इस बार मन को बहुत भाया है
क्योंकि गौरव का गुलाल और
अबीर हम सबके लिये आया है
आँखों का तारा रहेगा,
हिमालय हमारा रहेगा,
तो हम भी रहेंगे,

और रहेगी रंगों भरी झोली
रहेगा फाग, बसन्त, बहार
रंग-बिरंगी होली ।
फाग आया है
नेफ़ा और लद्दाख के मोर्चे से
अपने रंगों के पंखों पर
नया अबीर, गुलाल उड़ा लाया है
फाग आया है !

फाग आया है

फाग आया है
नेफ़ा और लद्दाख के मोर्चे से
अपने पंखों में रंग भर कर
नया जीवन लाया है !
नया-सा संदेश है
लिखा है
मेरी माँ,
मेरी बहन,
मेरी रानी,
तुम्हें बहुत क्लेश है
क्योंकि मैंने वीरता की राग से
लौ लगाई है
दुश्मन के दाँत खट्टे करते-करते
वीर गति पाई है ?
फाग आया है
जैसे इस बार मन को बहुत भाया है
क्योंकि गौरव का गुलाल और
अबीर हम सबके लिये आया है
आँखों का तारा रहेगा,
हिमालय हमारा रहेगा,
तो हम भी रहेंगे,

और रहेगी रंगों भरी झोली
रहेगा फाग, बसन्त, बहार
रंग-बिरंगी होली ।
फाग आया है
नेफ़ा और लद्दाख के मोर्चे से
अपने रंगों के पंखों पर
नया अबीर, गुलाल उड़ा लाया है
फाग आया है !

तुमने जो ब्याह रचाया

तुमने जो ब्याह रचाया,
मुझे अपना बनाया,
मुझे उससे सन्तोष है
कोई प्रश्न नहीं
कि तुमने अपना तन-मन-धन
अर्पित कर दिया
देश की बलि-वेदी पर
मैं तो अब भी सुहागिन हूँ
यह भी क्या कुछ कम सौभाग्य की बात है
कि
माँ ने आवाज़ लगाई
तो तुमने ब्याह की वेदी छोड़ दी
और चल दिये
चीनियों को मुँह की देने,
उनसे गिन-गिन कर बदला लेने
यानी स्थिति यह है कि चूड़ावत सूरमा-सा
समर में करनी कर रहा है
और मैं हांड़ारानी सी
उसका पराक्रम और मंगल मना रही हूँ
वीरों की गाथा दोहरा-दोहरा कर
गा रही हूँ !

मेरे चूड़ावत
मेरा भाग्य गुनते हो ?
मेरी बात सुनते हो ?
परन्तु !
परन्तु !!
उसमें और मुझमें अन्तर है
वह समाज की दृष्टि से सुहागिन है,
तो रहे
मगर उससे कौन कहे
कि मैं आत्मा से सुहागिन हूँ;
और, मेरा सुहाग
उसकी सिन्दूर की रेखा से
कहीं अधिक अजर-अमर है।
मेरे प्राण,
राजा मेरे,
लड़ाई के मोर्चे पर गये हो
तो मुड़ कर पीछे न देखना
कर्त्तव्य अपना लेखना
वैसे, न तुमने कभी मुझे देखा,
न मैंने कभी तुम्हें
बंधन मात्र इतना है
कि
तुमने मेरा वरण मन से किया
और, मैंने वह हो जाने दिया
अपना मन अपने हाथ में आने दिया
अब
प्रतीक्षा है

कि विजयी होकर नेफ़ा से लौटोगे,
मुझे अपना बनाओगे,
भांवरें डालोगे
मेरा व्याह रचाओगे
परन्तु !
परन्तु !!

तुमने जिस रूप को सँवारा था

तुमने जिस रूप को सँवारा था
वह न मेरा था
और न तुम्हारा था
तुम्हारे रूप में तो जीवन
झलकता है
तुम्हारी आँखों में
कर्तव्यों का सागर छलकता है
सागर सागर है,
हमेशा चंचल रहता है
और अकसर ही कहता है
ज़िन्दगी महज़ उसकी है
जो जी सके,
जो साँसों की कीमत अदा कर सके,
पराक्रम के जाम पर जाम
वक्त आने पर पी सके।

बस, तो तुम मोर्चे से आना
तो एक बार फिर वैसे ही
मुस्कराना,
जैसे कभी मुस्कराये थे
एक ज़माने पहिले
जब तुम मेरे यहाँ आये थे

मैं जानती हूँ कि
पहिले तो तुम चुप-चुप रहोगे
और फिर कैसे और क्या कुछ कहोगे
मैंने मोर्चे पर दुश्मनों को मुँह की दी,
अपनी जिन्दगी के दिये की लौ और-ऊँची की !
फिर, सोचा-चलूँ, तुम्हारे रूप को सँवारू,
तुम्हारे मोह के बदले अपना सब कुछ वारूँ,
और, आया हूँ तो तुम कुएँ के किनारे की
पगडंडी पर
अब भी खड़ी हो ज्यों की त्यों
बिल्कुल वैसे
जैसे
मैं छोड़ गया था
यानी
तुम्हारी इस आस्था ने ही
तोपों के दहानों की आग
में हिम की ठंडक भर दी,
चीनियों की हालत
बद से बदतर कर दी
और, अब मैं आया हूँ
तो मुझे हर तरह अपना करो,
पलकों में बन्द करो,
बाँहों में भरो
सुनती हो……
………………
सुनो
जानते हो

कि ऐसा कहते समय
तुम मुझे कैसे भले लगोगे ?
यह समझो कि अनुभूति के
गहनतम क्षणों में
तुम प्यार के गले लगोगे ।
सुनो………………

आज मैं होली......

आज मैं होली
हाँ, होली तो नहीं खेलूँगी,
पर जो बीती है मुझ पर
उसे साहस से झेलूँगी
क्योंकि विधाता ने खेली है होली
मेरे सुहाग से,
मेरे इस भाग से,
मैं भी रंग के बदले रंग
पिचकारी भर-भर कर डालूँगी,
वार करूँगी अपने दुश्मनों पर,
कहोगे तो मैं भी ऐसे अपनी होली मना लूँगी।
भूखा शेर
माँद तोड़ कर दौड़ा आया
कटघरे का फाटक
जैसे उसने खुला पाया
उसने अमन का कुंदा
होली की आग में डाल दिया,
सामने जो भी उसके आया
उसने उसको ऊपर उछाल दिया
कहने लगा— यह है हमारी खुशी,
चाहो तो इसे होली कह लो

गोली के धुएँ के रंगों में
चाहो तो बहलो
लेकिन, यह नहीं चलेगा
होली का पावक यहाँ भी जलेगा
मैं भी रंग के बदले रंग
पिचकारी भर-भर कर डारूँगी
खून छिड़कूँगी अपने दुश्मनों पर
कहोगे तो मैं भी
ऐसे अपनी होली
मना लूँगी !!

विजयश्री जीत कर

रवाँ-दवाँ
कारवाँ
इसी रास्ते से गुज़रेगा
तुम्हारा
इस क़तार और कारवाँ
में तुम
सहज ही पहिचाने जाओगे
दूर से ही नज़र आओगे
क्योंकि तुम्हारे चेहरे पर
उत्साह के सूरज
का सोना होगा
उमंग की चाँदनी की चाँदी होगी
रूप यश से गले मिला लेगा
चेहरा नन्दन-वन के फूल की तरह
खिला लेगा
और, मैं
घर के किसी कोने से
जंगले या बारजे से
देखूँगी तुमको
फूली न समाऊँगी
बिना कुछ पाये ही सब कुछ पा जाऊँगी।

फिर तो,
उत्तर के राग से,
प्यार और अनुराग से
तुम्हें पास बुलाऊँगी
कहूँगी कि
बस, साहस लेखना,
मुड़कर मत देखना
तुलसी के
मेरे नेह के पौधे को
आस्था सदा जल देगी
तुम्हारे लौटने की प्रतीक्षा
मुझको सदा बल देगी
लौटोगे
आज नहीं तो कल,
दुश्मन को मीत कर !
विजयश्री जीत कर !!

प्यारी, सखी मीना

मेरी प्यारी सखी मीना
कैसे कहूँ कि खल नहीं रहा है
इस तरह जीना
जिन्दगी के इन कड़े कोसों से
आ नहीं जाता है पसीना
हाल तो यह है कि
दिन तो बीत जाता है,
पर शाम नहीं कटती है
सितारों की उम्र बढ़ती है
तो मेरे धीरज की आयु घटती है
जानती तो हो,
गाँव की सुबहें,
गाँव की दोपहरें,
गाँव की शामें
कि जैसे दर्द की घटायें
घहरें......
हवा के लबों पर हमेशा हो
एक कहानी सी होती है
चौपालों से लेकर दिलों तक
एक वीरानी सी होती है
और, उस पर यह कि दिल को अकेला छोड़ कर

तुम्हारे जीजा गये
परन्तु, इतना सब होने पर भी
ख्याल आते रहते हैं नये-नये
सोचती हूँ
मेरी भावनाओं और
मुझसे बड़ा वह क्लेश है,
जिससे धड़क सी उठी धीरज की छाती है,
जिससे ऐंठ सा उठा पूरा यह देश है।
उनका पत्र आया था
उन्होंने अपने ढंग से
बड़ा धीरज बँधाया था
मैंने जवाब लिख दिया है
कि मुझे प्यार करते हो
तो इस समय अपना
कर्त्तव्य पालो
भारत के दुश्मनों को
हिमालय की बर्फ़ से निकालो
उनको दूर तक खदेड़ो,
और पूरी करो क्षति,
बस, केवल तभी
मैं तुम्हारी पत्नी
और, तुम मेरे पति !

....

मीना मेरी,
लिखना और बताना
कि मैंने ठीक किया न ?
वीर तो वही है

जो इसी तरह जिया न ?
चिन्ता मत करना
सराहो,
जो इस समय साहस
तुमने मुझमें देखा
तुम्हें बहुत-बहुत प्यार,
तुम्हारी, मैं
रेखा—

जो निधि माँगी

मैंने तुमसे
निधि जो माँगी दोगी
क्या समझ-बूझ कर
अपने सीने पर पत्थर रख लोगी ?
बहिन मेरी,
आज देश पर मुसीबत के बादल टूटे हैं,
भावों के कारवाँ
भावुक बनने वालों ने बन-बन कर लूटे हैं
ऐसे में
भामाशा की उदारता से काम लो
कोई न पूछे तो भी आगे बढ़ कर
अपना नाम लो
देश को आज धन के साथ
कंचन भी चाहिये
देश को धन के साथ
कंचन के साथ
जन भी चाहिये
देखो इधर, देखो इधर
लाई हूँ भिक्षा का थाल,
दोगी

दोगी लाल ?
दे दो न, बहिन मेरी,
दे दो ....

मेरी रानी

माना कि प्रेम सार है जवानी का,
मगर आँसू और पानी का
अन्तर कुछ समझो
कह दो कि जाऊँ
माँ की लाज को
खुद को मिटा कर बचाऊँ
आज की रात नहीं
आलिंगन-चुम्बन की,
बाहों के बंधन की,
नहीं रूप और मान की
आज की रात है सच्चे स्वाभिमान की
गंगा की आन की
हिमालय की शान की।
तो,
मुझे सजा दो,
अपने आश्वासन से,
तन से नहीं, मन से
कि दुश्मनों के सीने पर
चढ़ कर शौर्य तोलूँ
तुम गूँजो स्वरों में
जब माँ की जय बोलूँ !

लड़ाई के मोर्चे से

लड़ाई के दूर के मोर्चे से
संदेश आया है
बाल-गंधर्वों ने जैसे
नया गीत गाया है
सुना है कि
देश की सीमा से दुश्मन कुछ भागा है
अपनी बनावटी वीरता के प्रति
भ्रम और सम्भ्रम उसके
मन में जागा है
आखिर को हाथ कुछ भी नहीं आया है
और, फिर
मन ही मन कितना पछताया है !
उसने जो पाया है,
वह भी ज्यों खोया है
उसने तो फूलों की साँसो में कांटा सा बोया है
हमें इसका कलख है कि
हमारे इस पड़ोसी का चेहरा बहुत ज़र्द है,
उसे, दर्द हो न हो,
हमें बहुत दर्द है !
मगर,
हमने हार जानी नहीं,

हमने सदा जानी जीत !
सहज-मीत !
भाइयों मेरे
तुम लौट कर आये हो घर,
तो खुशियाँ रह-रह कर
लगा रही हैं आँगन के फेरे !
भाइयों मेरे !!

●

प्यारे बेटे

प्यारे बेटे !
अभी-अभी तुम्हारा ख़्याल आ
गया यों ही लेटे-लेटे
सोचा, चलो पत्र लिखूं
जितनी हूँ उससे कहीं अधिक
क़िस्तमवर दिखूं !
सो, लिखने बैठ गई
घर में कोई भी बात ऐसी
नहीं नई
कमला आई थी,
अपने नन्हें राजू को साथ लाई थी
तुम्हारा चित्र बेटे को दिखला कर बोली
मेरा राज मामा का भानजा
बनेगा
दुश्मन अभी नहीं मानेगा
तो मामा की तरह
खुद भी सीना तानेगा,
तनेगा
कहेगा हे भगवान
मुझे जल्दी से बड़ा करो,
जहाँ देश के जवानों की टोली हो

वहाँ मुझे भी खड़ा करो।
पिता जी
अब उतने अस्वस्थ नहीं रहते हैं
कहते हैं
लिख दो
स्वस्थ रहे और अपना कर्त्तव्य करे
भारत-माँ के आँचल
को यश से भरे
और, हाँ,
श्यामा-गाय
अब कहीं नहीं जाती है
तुम्हारे गोपाल को बहुत दुलराती है
जानते हो, गैया अब जल्दी हो बियायेगी
दूध की धारा से उसको नहलायेगी,
ताकि शक्तिवान रहे,
ताकतवाला बने,
हमारे घर में ही नहीं
देश में निराशा की रात हो तो,
आशा का उजियाला बने,
और, चीन जैसे
दुश्मन को प्राणों की भीख दे
मित्र को मित्र मानने की
अनमोली सीख दे
और क्या लिखूँ
रुपये-पैसे का सारा
काम जैसे-तैसे सर गया है
मेरा दिल रहे-रहे

अचानक ही भर गया है।
आखिर को माँ हूँ
लेकिन, मेरे आँचल की लाज को
सदा ही बचाना,
मेरी भी माँ
जो भारत-माँ है,
उसका शीश किसी तरह न झुके,
यह करके दिखाना
और, तुम यही कर रहे हो,
मेरे हर्ष का नहीं है वारापार
तुम्हें मेरा बहुत-बहुत, बहुत-बहुत प्यार !
तुम्हारी
मैं, माँ !!

●

बर्मूला के बर्फ़ीले रास्ते

भाइयों मेरे,
काट दिये तुमने हँसते-हँसते
अँधेरे के घेरों पर घेरे
यहाँ से वहाँ तक फैले हुए
बर्मूला के बर्फ़ीले-रास्ते,
ऐसा लगा कि बने थे तुम्हारे ही वास्ते !
भारत माँ की लाज,
अपना स्वाभिमान,
अपने इतने-इतने भाई-बहनों की शान
तुमने इस तरह बचाई
कि बहन की राखी की आँख गौरव से भर-भर आई !
तो फिर, आओ,
तवाँग की धरती का मान स्वीकारो
लेकिन यहाँ मत बैठो, हिम्मत मत हारो,
क्योंकि तुम अब तक नहीं हारे हो
धरती की शोभा हो, अम्बर के तारे हो !
लेकिन, बहन हूँ तुम्हारी,
मन में मोह-माया है,
अन्तर का एक प्रश्न होठों तक आया है
लड़ाई तो लड़ाई,
दुश्मन ने जैसा किया व्यवहार

उससे-घबरा कर नहीं, तिलमिला कर
तुमने मानी तो नहीं हार ?
मेरा मन कहता , उसके वार थे वार,
किन्तु, तुम्हारे वार थे दुर्निवार !
लड़ाई की हार ग्रौर जीत,
परसों का पड़ोसी, कल का मीत
भेड़िये की तरह सिर उठाये चला ग्राता है,
सोच नहीं पाता है
लेकिन,
हमने कभी हार जानी नहीं,
हमने सदा जानी जीत !
हमने सदा जानी जीत !!

●

जवान के शव पर

जवान, तुम नहीं मरे
खींच लूँ जबान
जो तुम्हें देख कर ऐसी बात करे
तुम तो महज़ सो रहे हो
थोड़े ऐसे-वैसे हो रहे हो
और, बस !
चेहरे पर तुम्हारे
लिखा हुआ है जस,
जस जो है अजर,
और, उसके साथ तुम हो अमर !
देखो !
ज़रा देखो
दो बैन बोलो,
आँख तो खोलो
दुश्मन ने अपनी हिंसा भावना
का रूप मोड़ दिया
और देश की सीमा का वह भाग
छोड़ दिया
जहाँ तुम जख्मी हुये थे
जगह और सीमा सारी की सारी
सर्वथा सुरक्षित है,

और, तुम्हारे बाद है अब हमारी बारी,
उसे बचाने की
तुम्हारे शौर्य की पताका को
गगन तक उड़ाने की !

●

मैं चाहती हूँ कि

धिक्कार है उस जीने पर,
साँसो का अमृत पीने पर
कि आदमी वीरता का दम भरे
मगर मौत से डरे।
माँग का सिंदूर
अपने ही हाथों से पोंछ दे
माँ के दूध की लाज को
यों ही अंगोछ दे
शर्म करो
कुछ तो शर्म करो,
इस जीने से तो
अच्छा है कि इसी क्षण मरो,
क्योंकि तुम्हारी
नन्दिनी के दुग्ध में
जैसे कहीं से बाल आ गया है।
पार्थ को आज ज्यों
समर में, रण में
भागने का ख्याल आ गया है।
मैं चाहती हूँ कि मेरा पति,
मेरा पुत्र, मेरा भाई
शत्रु को पछाड़े,

और, पूछे कि क्यों मुँह की खाई
मैं चाहती हूँ कि मेरा पति,
मेरा पुत्र, मेरा भाई
विजयी होकर ही घर आये
मेरा प्यार, मेरी ममता, मेरा स्नेह पाये
उस पर इतिहास का
नये और पुराने-पूरा अधिकार है
लंका के दिनों से
नेफ़ा और लद्दाख के इस जमाने तक
उसका जय-जयकार है।
हार को जीत मान कर
जीना उसने नहीं जाना
यह सिक्का खरा उसने कभी नहीं माना
इसीलिए कहती हूँ कि
गौरव अक्षुण्ण रहे,
अमर रहे, स्वाभिमान
हिमालय की चोटियाँ
बनी रहे अजर-अमर,
अक्षय बना रहा
हमारा यह आख्यान,
और, देश यह महान !

क्योंकि

जीवन के जिस मोड़ से
तुम मुड़े,
वह बड़ा कठिन था,
बीहड़ था,
हर बजता हुआ प्राण वहाँ जड़ था
लेकिन, तुम
इस दिशा को वरोगे ?
हिम्मत है कुछ,
साहस करोगे ?
कोई यह कहता था
कि यह काम तुमसे न होगा
तुम कमज़ोर और बुज़दिल हो
एक जगह आकर
जो ताल के पानी की तरह बँध जाये,
तुम वह मंजिल हो ।
सफलताएँ कम,
असफलताएँ तुमने अधिक जानी हैं
जीवन के जिस चौराहे पर
आज तुम खड़े हो
वह राह का अंत तुम्हारा
चिर पहिचानी है !

तो,
जो कुछ मैंने सुना है,
जो दूसरों ने दोहरा-दोहरा कर गुना है
उसे झुठला दो
बनी-बनाई रायों का यह
संगमरमर गला दो ।
आगे-ही-आगे बढ़ो
पीछे कभी न मुड़ो
क्योंकि
मैं तो यही समझती हूँ
कि तुम पीछे मुड़ोगे
तो वीर क्या स्वर्ग से अवतरेंगे ?
तुम कहीं से डगमगाओगे
तो दूसरे वीर क्या करेंगे ??

●

चीन का हुयेनसाँग

चीन का हुयेनसांग
पहाड़ों पर पहाड़ लाँघ
जब तू यहाँ आया था
भारत में
याद है यहाँ के मंदिरों में शीश
तूने किस तरह झुकाया था
और, फिर इतिहास में भारत का
तूने कितना गुण गाया था
आज कब्र से जाग
और देख कि
तेरे वारिसों ने फाँक रक्खी है कैसी आग !
हमें दर्द, हमले का कम
ज्यादा इस बात का है
कि मामला यह दुश्मनी का नहीं
दोस्तों की घात का है
वैसे आक्रमण
हमने सहे हैं,
लोहे से लोहा बजाया है
इतिहास की टूटी कड़ियाँ
अक्सर ही जोड़ी हैं,
और इस ओर उँगली से

इशारा करने वालों की
कलाइयाँ अक्सर ही मरोड़ी हैं।
बस, तो ह्युयेनसांग,
यह सत्य जो तू जानता है
उनको बतला दे,
और यह जता दे
कि हमारा जवान कभी पीछे नहीं हटेगा
और भारत के जन-साहस का
सागर कभी नहीं घटेगा,
कभी नहीं घटेगा !

●

ड्रैगन या साँप

ड्रैगन
या साँप...
मैंने तुम्हारा सारा
राज़ लिया है भाँप
हिंसा के ज़हर का
मणि पर लेप करते हो
खून ढो-ढो कर
ले जाने को
खेप पर खेप करते हो !
और हम, सत्य और अहिंसा
के गौतम हैं,
गाँधी हैं,
मगर छल और जाल
के लिये
प्रलय हैं,
आँधी हैं।
हम सब कुछ जानते हैं
और, आज दुनियाँ के सामने
अपनी गलती मानते हैं
कि सांप को हमने पाला है,
अपना विनाश अपने आप

कर डाला है !
दोस्ती और प्यार
साँप क्या जाने
आदमी की बोली
कहाँ से पहिचाने ?
पर, दूध जो पिलाता है
उसे मूर्ख समझना शोभा नहीं
देता है,
क्योंकि......
क्यों कि साँप के दाँत तोड़ना
उसे खूब आता है !
तो फिर, हम आज
साँप को जो जीता नहीं छोड़ेंगे,
दाँत उसके ज़हर के एक-एक कर तोड़ेंगे !

●

राणा प्रताप

राणा प्रताप,
महाराणा
हल्दी की घाटी के तेज वार
दुर्निवार
आज आवश्यक हैं,
क्योंकि
देश भारत के
रुपहले हिमालय को
दुश्मन ने घूरा है
ऐसे में केवल चित्तौड़ नहीं
बल्कि पूरे देश को
भरोसा तुम्हारा है,
और सो भी तो पूरा है।

चेतक को टेरो,
दुश्मन की ओर फेरो,
और खड्ग ऊँची कर
देश के मान को
सच्चा अभिमान दो
आज नई करवट ले,
ऐसा आख्यान दो
मंत्रीवर भामाशा

कहाँ गये ?
उनको बुलवा लो
पराक्रम की ग्राज एक
नई नींव डालो
'मरनो भलो बिदेस की जहाँ न अपनो कोय
माटी खायें जनावर महा महोच्छव होय,
कहने वाला आज कहे
आज जो वीर हो सो रहे
अवसर एक आया है,
जी भर कर नाम करो
मरने का नहीं, अमर रहने का काम करो
राणा, उतरो
इतिहास से,
धरती पर आओ
नेफ़ा के मोर्चों पर
जन गण मन गाओ !

हमने जो स्वेटर बुने

हमने जो स्वेटर बुने,
तुम्हें मिले ?
इतनी दूर रहने पर भी
तुम्हारे अन्तर में
स्नेह और ममता
के फूल खिले ?
यह
यह स्वेटर,
यह दस्ताने,
यह मफ़लर-गुलीबंद
मोह के सुनोगे तुम
इनमें सुखद-छंद ।

भाइयों,
कह देना चीनी से
खुदा के बंदे
यह स्वेटर,
यह दस्ताने, और गुलीबंद
और इनके फँदे
इनकी बुनावट
में शक्ति की साँस है
अगर अब भी नहीं समझा

तो आज समझ ले कि
यह ब्रह्म-फाँस है !
यह चक्रव्यूह है
अगर इसमें धसेगा
तो फिर नहीं उभरेगा,
ऐसा फँसेगा
तू तो एक ऐसा पात्र है
जिसमें नहीं तल है
और, इस तरफ़ मैं अकेली नहीं हूँ,
मेरे पीछे मेरी सहस्त्रों बहनों का बल है !!

●

देश को सोना

ये कड़े,
ये छड़े,
यह पहुँचियाँ,
ज़ञ्जीरें गले की
अब नहीं चाहिये
क्योंकि यहीं सोना
आज और कहीं चाहिये
सवाल यह है कि
आज सुहाग रहेगा कि सिर्फ़ सोना ?
सवाल यह है कि आज
बहिनों की जिन्दगी में
भाइयों का भाग रहेगा कि सिर्फ़ सोना ?
सवाल यह है कि
क्या गहने रहेंगे
और शिर अपमान से
लचा रहेगा ?
सवाल यह है कि
यह देश बचेगा
या सिर्फ़ हमारे बदनों पर और
तिजोरियों में
सोना बचा रहेगा ?

जवाब साफ़ है
हमें जहाज और टैंक दो
राइफ़िलें और खून के बैंक दो,
और, वह सब कुछ दो कि
दुनिया में एक अन्यायी हो न रह जाये
ले-देके,
कि चैनी आये और हमारे सामने आकर
घुटने टेके
गहने हम से ले लो,
लेने वालो !
हमें स्थिति की
जानकारी पूरी है
देश बचे,
यह आवश्यक है,
हमारा गहना बिल्कुल नहीं,
जरूरी नहीं है !!

●

ग्रहण लगा

दान करो,
दान करो,
देश पर ग्रहण लगा, दान करो
सोने-चांदी का दान करो
कपड़े-लत्ते का दान करो
गेहूँ-चावल का दान करो
दान करो
ग्रहण लगा, ग्रहण लगा, ग्रहण लगा !
दान करो,
दान करो,
सोने का दान करो,
अपने हिमालय के हिम
का कुछ मान करो
दान करो !
दान करो,
दान करो,
आज रक्त-दान करो,
उठती-जवानी का
सच्चा सम्मान करो
दान करो !
दान करो,

दान करो,
आज प्राण-दान करो !
माता की रक्षा को
सब कुछ बलिदान करो
संकट की बेला है,
पुण्यों का ध्यान करो !
दान करो, दान करो
ग्रहण लगा ग्रहण लगा ग्रहण·लगा !

●